उपदेशप्रासाद भाग-२

फोल्डर नं.	००२६०३
ग्रन्थ	उपदेश प्रासाद भाग-२
लेखक	विजयलक्ष्मीसूरिजी
प्रकाशक	सुरेन्द्रसूरीश्वरजी जैन तत्त्वज्ञानशाला – अहमदाबाद
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९९८
पृष्ठ	३५४

मुख्य टाईटल

किञ्चित प्रास्ताविकम

४२। બે મિનિટ

प्रथमावृतिगत प्रस्तावना

श्री उपदेशप्रासादद्वितीयविभागस्य विषयानुक्रम

सप्तम स्तम्भ । ७ ।

अतृप्तकामाया वामायास्त्यागे श्रेष्ठत्वम – किरात ---------- १

काश्चित्स्वीकृतं व्रतमापधपि न मुञ्चन्ति – अञ्जनासुन्दरी ----------३

स्त्रीणामङ्गविलोकने मोहो न कार्य – सुकुमालिका ---------- ५

स्त्री अनेकजनानां गुणहानिकरी – वल्कलचीरी ---------- ६

विषयी नरोऽकार्यं कुर्वन्न बिभेति – अष्टादशनात्रककष्ण ----------८

विषये सुखस्वल्पताऽपायबहुलता च – मधुबिन्दुकथा ---------- १०

महासतीत्वलक्षणम – शीलवती ---------- १५

शीलप्रभावत बिन्नावयवानां पुनर्भवनम – कलावती ----------१३

तत्त्वज्ञौ दम्पती संकटेऽपि व्रतं नामुञ्चताम – चन्दनमलयागरी ---------- १६

बहुजनप्रार्थनीयाया स्त्रीयास्त्याग एवोचित – ईलापुत्र ---------- १७

जिनेन्द्रैरपि शीलव्रतमङ्गीकृतम – श्रीमल्लिनाथ ----------१८

मैथुनसेवया बहुगुणहानि – सत्यकि ----------२१

स्त्रीचरितस्य विषमता – नूपूरंक्ता---------- २२

चतुर्थव्रतधारकस्य चातुर्मासिककृत्यकरणम – विजयश्रीकुमार ---------- २४

विषये बहुलपापं दुःखप्रचुरम – मुञ्जराज ---------- २७

अष्टम स्तम्भ ८

परिग्रहनाम पञ्चमं महाव्रतम – विधापति ----------३१

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पञ्चमव्रतस्य पञ्चातिचारा – पेथडश्राद्ध ---------- ३२
परिग्रहपरिमाणाकरणे दोष – मम्मणश्रेष्ठी ---------- ३४
परिग्रहासक्तोऽनेकपापं करोति – भ्रातृध्यकथा ---------- ३५
षष्ठं दिग्विरतिव्रतं – सिंहश्रेष्ठी ---------- ३६
षष्ठव्रतस्य पञ्चातिचारा – कुमारपाल ---------- ३८
षष्ठव्रतेनैव लोभनाशसंभव – चारुदत्त ---------- ३९
षष्ठं व्रतं केचित्संकटेऽपि न जहति – महानन्दकुमार ---------- ४०
सप्तमं भोगोपभोगव्रतम – चतुर्दशनियमस्वरुपम – सचित्तत्यागे अम्बडशिष्या ---------- ४३
द्वाविंशत्यभदयस्वरुपे चतुर्महाविकृतिस्वरुपम---------- ४५
शेषाण्यभक्ष्याणि (५-१४) ---------- ४९
रात्रिभोजननिषेध – मित्रत्रयकथा ---------- ५०
शेषाण्यभदयाणि (१५-२२) ---------- ५२
चलितरसं पर्युषिताधभदयम – गुणसुन्दर ---------- ५३
अज्ञातफलभदणनिषेध – वंकचूल ---------- ५५

नवम स्तम्भ ९

अनन्तकायस्वरुपम – धर्मरुचि ---------- ५७
सप्तमव्रते विंशातावतिचारेषु आधा पञ्चातिचारा – घर्मराज ---------- ५८
कर्मादानसंबन्धिपञ्चदशातिचारे दश अतिचारा – धृतचर्मवणिक्कथा ---------- ६१
कर्मादानस्यान्त्यपञ्चातिचारा – तिलभट्टकथा ---------- ६२
पापव्यापारनिषेधे कथं द्रव्यवृद्धि – यशोवर्मराज ---------- ६४
शुद्धव्यवसायप्रकार – धूर्तवणिक, मुग्धश्रेष्ठिपुत्र ---------- भावडश्रेषठी च६६
व्यवसायविषया हितशिक्षा – कृपणकथा, लक्ष्मीदारिद्रे ---------- ६८
मायाकरणाकरणयो फलम – महणसिंह, धर्मबुद्धिपापबुद्धी ---------- ७१
पुनर्व्यवसायविषया हितशिक्षा – सुरत्राणकथा, कुमारपाल धनदत्तश्च ---------- ७३
विश्वस्तधातृफलम – विसेमिरा ---------- ७५
अष्टममनर्थदण्डरुपरिहारव्रतम (तस्य प्रथमभेद) – कुरुड अकुरुड ---------- ७६
अनर्थदंडशेषवक्तव्यता (२-३-४ भेदा) ---------- ७८
विकथारुपप्रमादस्य विशेषस्वरुपम – रोहिणी ---------- ८०
सामान्यत प्रमादाचरणम (चतुर्थभेद) – मृगसन्दरी ---------- ८२
पुन प्रमादाचरणमेव दर्शयति – पुरन्दरनृप ---------- ८४

दशम स्तम्भ १०

अनर्थदण्डव्रतस्य पञ्चातिचारा – सूरसेनमहीसेनौ ---------- ८७
अनर्थदण्डव्रतस्यैव वर्णनम – चित्रगुप्तकुमार ---------- ८८
प्रथमशिक्षाव्रतं सामायिकाख्यम – ईभ्युवृद्धनार्यौ ---------- ९०
सामायिकव्रतस्य पञ्चातिचारा – महणसिंह ---------- ९१

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सामायिकस्य भेदा – चौरचतुष्टयी ---------- ९३
सामायिकं सर्वगुणानां भाजनम – चन्द्रावतंस---------- ९४
सामायिकं दोषरहितं विधेयम – जटिनो जडशिष्य ---------- ९६
सामायिके धर्मोपकरणानि – कुमारपाल ---------- ९८
सामायिकफलम – केशरिचौर ---------- १००
देशावकाशिकाख्यां द्वितीयं शिक्षाव्रतम – सुमित्र ---------- १०२
देशावकाशिकस्य पञ्चातिचारा – लोहजंघ ---------- १०३
षडष्टाह्निकपर्वाणि (पर्युषणापर्व च सभेदं सद्दृष्टान्तम – श्रीहीरविजयसूरि ---------- १०५
अष्टाह्निकपर्वाराधकैर्वर्षकृत्यानि ११ विधेयानि ---------- ११०
पर्वदिनेषु पौषधो न हेय – अदायी चरमराजर्षि ----------११३
तृतीयं शिक्षाव्रतं पौषधाध्यम – शंखश्रावक ---------- ११६
एकादश स्तम्भ ११
पर्वाराधनविधि – पृथ्वीपालनृप ----------११८
पुन पर्वाराधनविधिरेव – सूर्ययशा ---------- १२०
पौषधे प्रतिक्रमणम, तस्याष्टौ पर्याया – आधपर्यायध्योपरिभूपवणिक्कथे ---------- १२३
तृतीय पर्याय – डुग्धकावडिवृत्तान्त---------- १२५
तुर्यपञ्चमषष्ठा पर्याया – कथात्रयम ---------- १२५
सप्तम पर्याय – अनुध्यायपत्नी ---------- १२७
अष्टम पर्याय – वस्त्रागदयोर्दृष्टान्त ---------- १२७
ईर्यापथिकस्वरुपम – अतिमुक्तमुनि ---------- १२८
पौषधस्यातिचारा – नन्दमणिकार ---------- १३०
पौषधव्रतिन स्तुति – सागरचन्द्र ----------१३१
पौषधफलम – महाशतकश्रेष्ठी ----------१३१
अतिथिसंविभागाभिधं चतुर्थे शिक्षाव्रतम – अम्बिकाश्राविका ---------- १३३
पुन चतुर्थं शिक्षाव्रतमेव – संक्षिप्तिदृष्टान्त ---------- १३४
दानवर्णनम – संगमको वत्सपालक ---------- १३५
अतिथिसंविभागस्यातिचारा – चम्पकश्रेष्ठी ---------- १३८
द्वादश स्तम्भ १२
गृहिणां भोजनविधि ---------- १४०
दानस्य स्तुति – कृतपुण्य ---------- १४१
भोजनकाले मुनिस्मरणपूर्वकं दानम – धानवहश्रेष्ठी---------- १४४
जैननृपाणां दानविधि – कुमारपाल ---------- १४५
साधर्मिकसेवाफलम – श्रीसंभव – दंडवीर्य – धर्मदासा ---------- १४६
पौषधशालाकरणफलम – आमभूपादय ---------- १४८
साधूनांमकल्प्यं दानं न देयम – नागश्री ---------- १४९

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुमोदकस्यापि दानफलम – मृग ---------- १५०
दानकाले बिन्द्रादिदोषत्याग – वरदत्त ---------- १५३
अल्पदानस्यापि महाफलम – मूलदेव ---------- १५४
निश्चयव्यवहाराभ्यां द्वादशव्रतविवेचनम ---------- १५५
ईमानि व्रतानि बलादप्यन्यस्य देयानि – तेतलिपुत्र ---------- १५७
प्रासनृभवानां शिक्षोपदेश – रत्नचूरु ---------- १५८
ईमानि व्रतानि अल्पकालधृतान्यपि सुखदानि – प्रदेशनृप---------- १६१
श्रमणोपासकवर्णनम – कूर्मापुत्र---------- १६४

Jain Education International 2010_05 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org